

Transcript of Zoom Meeting at 5.00 pm on October 01, 2025

Except for removing some garbage (which collects when someone speaks in Hindi and the caption language has not been reset) and my part, this transcript is mostly uncorrected and has machine-made errors. Request all to go through their parts and send me corrections. The docx file is available in shared Google Drive folder:

https://drive.google.com/drive/folders/1UJDbgeLd6_Mgs9c0pTHXduOpDNZWT1Sh?usp=sharing - Girish

Girish Sahasrabudhe:

Okay, Gandhi is not coming. I don't know if Naresh is coming, because Naresh has seen this. Vinash won't be there, so I think we can start.

Sunil Sahasrabudhey:

Pick.

Girish Sahasrabudhe:

Nope. Huh. So, we can, like, last time, begin with, hearing about Varanoasi preparations and... final program, etc. And then I was thinking we can go to discussing some developments like Laddakh, or Gaza, or whatever we want, so... If that is okay. Then, we can start with Varanasi... Sunil, or Chitraa ji हॉ, आप बोलिए ...

Cjitra Sahasrabudhey:

हॉ वाराणसी में मतलब अनुभव तो अच्छा आ रहा है बहुजन स्वराज पंचायत के विचार को लेकर ... कई लोगों से बातें भी चल रही हैं और तैयारियों में मुख्य रूप में (...अस्पष्ट...) निकट आ गया है। पुस्तक प्रेस में गयी है। परसों तक आ जाने की उम्मीद है ... और आयोजन के लिए ... अभी तक यहां पानी बरस रहा है ... बनारस में, ... लेकिन आयोजन के लिए श्यामियाना वगैरे बनाने का सारा ये कर लिया ... है जिसमें पानी अंदर तक न आये ऐसी व्यवस्था है। तो ये सारे काम या व्यवस्थाओं से संबंधित हो गए हैं पक्के। लोगों ने संपर्क किया है जो साथ में विद्या आश्रम के इतने दिनों से काम कर रहे हैं और एक डेढ़ सौ - दो सौ के बीच में लोगों के आने की उम्मीद है। ऐसे तो तैयारियों में ... जो पुस्तक में लिखा है, उसमें करीब बीस बाइस लोगों ने लिखे हैं एक ज्यादा ... किसी किसी के दो भी हैं और पंचायत में पहले उन्हीं को बोलने के लिए हम अवसर देंगे जिनके लेख हैं। तो ये सब तय हुआ है। यहां हर रोज़ लगभग लोगों से बात हो जाती है। तो यह सब हो जाती है। यह रामजनम, हरिश्चंद्र, लक्ष्मण, कमलेश और यहां के सारे लोग ... फ़ज़लुर्रहमान अंसारी ये सब लोग सक्रिय रूप से इसके लिए काम कर रहे हैं और तैयारी की गई है सारी। आइडिया ... कोशिश यह है कि यह आयोजन एक ऐसे समूह को तैयार करे जो है ... जो कि एक ऐसे समूह को आगे ले जाने के बारे में तैयार हो ... और मतलब इस पंचायत से हम लोग यह उम्मीद रख रहे हैं कि कुछ नए लोग आएंगे। और बहुजन स्वराज पंचायत की बात मतलब इस चीज़ को चलाने की ज़िम्मेदारी लेंगे। तो इस तरह इस तरह के तीन ... ढाई दिन की ये जो पंचायत हो रही है कोशिश इसमें अलग अलग तरह के लोगों को बुलाया गया है प्रजापति समाज से, विश्वकर्मा समाज से। अभी फिलहाल हलचल जादा है यहां ... बिहार का जो इलेक्शन हो रहा है उसके बाद से और उसमें जो भी बात है उसके चलते बनारस में गतिविधियां काफी बढ़ गई हैं ... राजनीतिक कार्यकर्ताओं का मिलना-जुलना और यह बढ़ गया है। उसमें भी बहुजन स्वराज की बात लोगों से ... कई लोगों से बात हो रही है। तो ये एक माहौल अच्छा बन गया है। तो इसे ... तो हमको अच्छे ढंग से और प्रभावी ढंग से करने की तैयारी करनी है। दो बातों का हम केवल यहां जिक्र कर रहे हैं कि इसमें ये सारी बातें दो सत्रों में तो होंगी ही ... बहुजन और स्वराज पर ... लेकिन यहां हम ... जिस तरह से पुस्तक में एक कला का चैप्टर रखा है ... भाग रखा है ... वैसा ही इस पंचायत में (अस्पष्ट) करने की कोशिश करेंगे। एक चित्र प्रदर्शनी और काव्य प्रदर्शनी का मतलब पाठ का भी हिस्सा रहेगा सत्संग के अलावा। सत्संग में इंदौर के कलाकार भी प्रस्तुत करेंगे अपना, और यहां के भी वाराणसी के ... वो कैसे कब होगा उसका पूरा कार्यक्रम हम लोगों को ... चार तारीख तक फाइनल हो जाएगा। उसको हम लोग भेजेगे। चित्र प्रदर्शनी में मुख्य रूप से यहां के सामान्य जीवन की झलक प्रस्तुत की जाएगी। सामान्य जीवन में ज्ञान के जो

प्रकार है लोगों के पास उसको कैसे इन्होंने अभिव्यक्त किया है। सामान्य चित्रकार ने ... कोई बड़ा नाम नहीं है। उसको हम लोग रखेंगे वहां। दूसरी बात है कि ये जो लोग कार्य करते रहे हैं लोग विद्या जन आंदोलन में अलग अलग इलाकों से इंदौर से या वाराणसी से या और भी कहीं से और भी सुझाव आ सकते हैं नाम के ... उनको हम कुछ आंदोलन की तरफ से एक सम्मान देना चाहते हैं लोकविद्या जन आंदोलन की तरफ से ... जैसे रामजनम हैं, लक्ष्मण हैं, हरिश्चंद्र है जिनको आगे के हम यह सोचना चाहते हैं जिम्मेदारियां कुछ नाम सोचे हैं जैसे लक्ष्मण जी को हम 'आचार्य' के नाम से पहले पुकारते हैं और हरिश्चंद्र लोकविद्या पत्रकार के रूप में उन्होंने अपना नाम खुद ही चुना है ... ऐसे कुछ नाम हम लोगों ने तय किए जिसमें मैं थोड़ा सा सामने रखती हूँ, ये कोई पक्के नहीं है, लेकिन रखा है कि इसको हम लोग आप लोगों के विचार हमें चाहिए अ फ़ज़लुर्रहमान के लिए हमने नाम सोचा है 'नजरिया साज़', जो दर्शन का निर्माता है, दर्शनों का निर्माता है ... इस तरह से एक नाम दिया है 'नजरिया साज़' दृष्टिकोण के निर्माण करने वाला ... रामजी यादव के लिए सोचा है 'बहुजन-प्रवक्ता', पारमिता के लिए सोचा है 'स्वराज वाहिनी' एहसासन अली के लिए 'समाजी कारीगर' ... 'समाजी' शब्द उर्दू का ही है यहाँ ... और 'समाजी' का मतलब सामाजिक लेते हैं। प्रभावती जी यहाँ जो है जो सारा काम देखती है रसोई का काम देखती है उनको हम शुरू पहले से 'अन्नपूर्णा' कहते हैं। तो उनका तो वही है लेकिन अब अंजू देवी भी उनके सहयोग के लिए है और वही काम करती हैं। ज्यादातर अतिथि लोग आते हैं, चाहे जब आते हैं, चाहे रात को भी आए, खाना बनाके उनको खिलाना, ये सारे काम करती तो उनको भी हम लोग 'अन्नपूर्णा' ही बुलाएंगे और सरविन्द पटेल और राथ साहू भगत को लोकविद्या सत्संगी कह रहे हैं। तो इस तरह से कुछ हमारे साथ जो दस-बारा लोग हमेशा कार्य में रहे हैं उनका एक सम्मान करके यह नाम उनको दिया जाए इस कार्यक्रम के दौरान ये कोशिश है। दो आयोजन अलग तरह के पंचायत में रखने की कोशिश है। इससे एक कोशीश ... इसमें यह विचार भी आया कि जैसे अध्यक्ष होते हैं ... सचिव होते हैं ... ऊपर नीचे होता है पद के हिसाब से ... कि फलाने ये हैं ... यह नाम सारे ऐसे हैं जिसमें आंदोलन से संबंधित कार्य का प्रकाश भी पड़ता है और प्रकार भी समझ में आता है और इसमें कोई पद ऐसा नहीं है जो कोई ऊँचा है, और कोई नीचा है ... ऐसा नहीं सबकी भूमिका है बराबर की। तो इस तरह से इसकी तैयारी हम लोग कर रहे हैं यहाँ। और आप सब लोग आएंगे। उम्मीद है काफी लोगों ने लिख भी दिया है कि आ रहे हैं कि और सबका ... सब लोग आए और उस पर आगे के बारे में सोचें ... इस आयोजन को सब हम लोग किसी इस तक पहुंचाएं ... के लिए मालूम नहीं ... मतलब किसी और को देने के पहले कुछ एक नया अध्याय अगर हम लोग खोल सकते हैं तो खोलने की कोशिश हो रही है, बस।

Girish Sahasrabudhe:

So... GSR? could you follow the whole thing?

Sivaramakrishnan G:

Yeah, more or less, more or less. I mean, yeah. our matters are spoken, it's easy to follow. It's only when other things are being spoken, it becomes difficult, I think. I could follow much of it.

Girish Sahasrabudhe:

Okay. Yeah, I mean, apart from the rest of the things about organization of the event, number of people expected, new contacts. And, ... the aim to come up with a group which will... take responsibilities with regard to the Bahujan Swaraj narrative, so to say ... The other thing which she mentioned was about, some titles ... It was about giving I don't know whether they should be called titles, but, two kinds of programs. One... on the Satsang by Indore people, as well as people at Varanasi. Then, a session for... poetry, recitation ... kind of. And one session... I mean, one part somewhere. I don't know where all this is going to be put in the program. But where various people working with the ashram for so many years ... they will be honored with certain titles, sort of. I don't know if you followed all those titles.

Sivaramakrishnan G:

Yeah ... right, more or less, yes.

Girish Sahasrabudhe:

Yeah. Yeah, so that is the other... maybe Sunil can explain that better ... No? अगर कुछ लिख दें तो लोग विचार कर सकते हैं उसपर कुछ ... वैसे ये जो नाम हैं वो मिल जायेंगे जब हम देखेंगे ट्रांसक्रिप्ट को ... Alright, any comments on this? Krish... Oh, Abhijit, ... Suresh...?

ಡಾಗ್ಗ ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

No. No comments.

Girish Sahasrabudhe:

Okay, any suggestions about ... When are these, to be put in there during the program? Krish, you want to say something? No? ... This is on the second day sometime? I mean...

Chitra Sahasrabudhey:

हाँ ... कौनसा? सम्मान करने का?

Girish Sahasrabudhe:

हाँ ... और बाकी भी कल्चरल प्रोग्राम ...

Chitra Sahasrabudhey:

ये तय करना है अभी ... चार तारीख को सब लोग आयेंगे ...

Girish Sahasrabudhe:

Okay. ठीक है Alright, so, we can, Discuss some other things which have been happening. like, Ladakh, and Gaza for example. If people want to... express any opinions about the kind of developments that have been taking place. Including the ... various interpretations which are coming forward, like, the comparison with Nepal, and charges... put on... Sonam Wangchuk and his, arrest etcetera, etcetera. The way these events are going, looks like, extreme kind of repression and labeling. So... Let us see if anybody has any specific things to say about it. And maybe compare it with other things. The other, thing is this Gaza Strip ... solutions which have come... I mean, the so-called proposal extended by Trump, the main point in which is keeping Palestine entirely out of it, and the surprising thing is that almost all nations have welcomed it ... and maybe India was the last... among the last ones, but China, Russia, Turkey, most of the Muslim nations, all of them seem to have extended some kind of initial support, although there has been criticism about various, parts of the proposal. The 20-point proposal, which has come up, 21-point, or whatever. From USA. Trump. So... I think.

Sunil Sahasrabudhey:

But it involves recognition of Palestinian state.

Girish Sahasrabudhe:

It ... yes, it involves the second thing, which is, being talked about as a compromise is that the Palestinians are not to be driven out. And, a certain... I mean, it's just the Gaza Strip, maybe. Nothing much more than that, geographically. They have been, of course, talking about much larger portion. The Hamas people are to be driven out completely. Palestinians are to be maintained there. But there is a trans... government, I mean, transition government, etc, etc. In which various people are there, Chaired by... Trump himself. And the only other person named just now is Blair. The ex-prime Minister.

Sunil Sahasrabudhey:

Yeah, yeah. Libra.

Girish Sahasrabudhe:

Yes, who is supposed to be... supposed to have been... the... Man behind, claim that there is evidence of weapons of mass destruction in Iraq.

Sunil Sahasrabudhey:

Oh, that is nice.

Girish Sahasrabudhe:

etc, long back. So this is the only person who has been named, the other person who has been named. The more surprising thing is the... very quick, sort of welcome messages, which have come from China, Russia, Turkey, And, other Muslim countries also. So what exactly is this indicative of? Because nothing much actually can be... the Palestinians are said to be thinking about it They have been asked to respond within 4 to 5 days, and the usual threats have been met. If they do not accept it. In terms of severe consequences, etc. No, all this is, Actually going to a scale which have not been witnessed for a long time. In, on the global listing, in terms of, A direct, kind of, Control, And, almost dictatorial kind of... So, essentially, completely isolating Palestine. Palestinian people, so to say, and... And open the stick. of the Gaza genocide.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

You see, I think, The mistake for us, if I can speak for a couple of minutes. I think one of the mistakes that we might make, usually is to assume that these announcements and these efforts are about Palestine. That is possibly a very mistaken assumption, because This is not about Palestine. This is really not about Palestine. What seems to be happening the world over, especially in Western Europe. and significant parts of the MAGA support base of, USA. is that they are tired of, Israel. USA getting, implicated in, All the genocidal actions of these people. And while Palestine is, Israel is quite correctly blamed for, Creating these genocidal kind of actions and so on. We must understand that USA is at the very root of this. USA and Britain, and to a smaller extent, the European nations. And, the British MI6 and the US CIA NSA and so on, have been very deeply involved in this. And, with MI6 actually acting as the advisors for CIA, NSA, and so on. Because of their long-term involvement with the The mass murder of, represents one in the last 150 years. But this is, as I said, nothing to really....

Yeah, yeah. So, we must understand that in the last about 2-3 years, there has been a significant, two-fold, attack against the establishment within Western Europe. And, to a similar extent, in the USA, In Western Europe, there are two thrusts which are actually attacking the current status quo. One of which is the so-called far right. Which is very alarmed by the level of immigration and the kind of social and cultural chaos that it seems to be actually creating. And a lot of that is also something which is made as a big deal, because there are opportunistic forces which capitalize on this to create even greater kind of threats and fears about the migrants, which in turn translates into votes. And, the second factor that seems to be also affecting these people list, remember that after, 2014, but to a large extent after 2022, the... the war with Russia is creating a lot of trouble for Western Europe, mainly because they have, turned away from buying energy from Russia. Russia's energy, to put it simply, is cheaper, and what energy they're getting from elsewhere is much costlier. it's almost 100% additional cost compared to what they were paying in 2022. This has led

to a lot of industry from, getting, you know, getting out of West Germany and various other places in Europe. And why it's important, I'll just come back to that. There's a huge amount of deindustrialization which is happening in West, you know, Germany. And, much of the rest of Europe as well. So this has resulted in a very serious kind of economic, destabilization slowly, I mean, you know, it is not very high yet, but there is a certain kind of recessionary tendency which is, you know, coming into Europe. And, that seems to affect the reactions of the ruling parties, whether it is Labour or Conservatives, please remember in England, the Conservatives were rooted out, and you put the Labour in. And they have actually been supplying to Israel just the same kind of armaments and help and logistics support. As they have been, actually, in the past. So this is one part of the story. The other part is that of the ordinary individuals of Western Europe. Who are so badly sort of affected by the joblessness, the lack of employment, deindustrialization, and the economic kind of issues associated with high energy costs and so on, which has led the people to get very frustrated with the involvement of these governments into Ukraine, Israel, and so on. So that is actually getting into very large proportions. I don't know if some of you are aware of the fact that in Greece, Italy, everywhere, Austria. England, France, and various other places. There have been huge marches of thousands, hundreds of thousands of people. Please remember that, you know, in Europe, for 100,000 people to gather is something very astounding. These are people who are actually saying that, you know, liberate Palestine and protest against the Israeli massacre and genocide of the people and so on. So, some of these factors are also creating a little bit of a rethink. Finally, we may have to remember that anything that the ruling classes do, the ruling elite of American West do, is, if I think it's about self-preservation. It has very little to do with their boundaries and so on, although those, Excuses and rationalizations can actually come in, but it's all about self-preservation, and now they are threatened. from Germany right down to England, the far right is asserting itself in very, very big ways, and because of the frustration with the conservatives or the, you know, labor in Germany, or similar people over there in Germany and England, these things are taking a very huge kind of leap So, this whole business of recognition of Palestine This whole idea of creating a piece and so on. I think, you know, one can look into the details of this 21-point agenda and so on. But what a farce it is. And, I think much of it, if you have already read, as most of us have, 1984, the Department of Peace becoming the Department of War, and this and that, and so on, war is peace, peace is war kind of thing. This is something which perhaps doesn't require a very huge amount of discussion as well. And, in the other sense, I mean, you know, in, beyond, if you go beyond the West. And, a last statement about the West before we go to the rest of the world. I think we must also include, in our definition of power, the exercise of power, the power of a minority, and the elite, and the oligarchies which actually rule the world. One of the greatest problems that they seem to be facing now in their efforts, in the governmental efforts, societal efforts towards deglobalization, is how do we manage our hegemony, even while a certain amount of deglobalization is happening in the West. Deglobalization in the West is a consequence of the awareness that the power through trade is not accruing to the West, but is actually tilting the balance in favor of the You know, the bricks are other people, and so on. So, one of the sad results from the Western viewpoint of the globalization, which started around, let's say, 70s, 80s, is that what they had hoped for was a continuing exploitation of the resources of the world, using certain kinds of ruling elite and classes of the third world and the emerging world as their allies in creating a global kind of a world where they could actually hold the strings of the

world. That has, unfortunately, you know, it has turned out to be something different. All of a sudden, these people are becoming powerful enough to enforce some of their viewpoints on these people, saying this is unjust, that is wrong, and so on and so forth. And that creates very serious problems. And do also remember that whether it is Russia or China, there is a ruling elite there, which has benefited enormously from globalization. Although they don't necessarily have to be, you know, libertarians or globalists anymore, or qualified globalists and qualified libertarians. they have benefited a huge amount. In fact, if you look at the business community of China, for example, they have benefited unbelievably. I mean, in terms of billions of dollars. And it is not anybody's case that the level of inequalities in China is the same as in USA or in India, but nevertheless, there is a significant amount of disparity in the incomes of a very small percentage of these people. who may not be as influential as in the West, but nevertheless, their interests have to be protected by the people, you know, who rule the state in China. for example, or Russia. So, coming back to the rest of the Western world and the rest of the world in this particular game, please remember that both China and Russia, and of course India, we have been exporting a huge amount of You know, things... it may not be arms, it will be actually electronics, it will be primary materials, and all kinds of things that various countries export to. Israel, in spite of, I mean, you know, their lip services and sympathies given towards, the horrible kind of mass murder of Palestinians and so on. That goes on, even... I've seen some statistics of 2025 calendar year, including the most recent quarter and so on. And these are thriving kind of things. Turkey does that. Egypt does that, and, you know, not merely Russia, China, India, and so on and so forth. All this trade relationship, and of course, the trade routes are also under threat because of, let's say, either Iran or perhaps some of the Houthis and so on. So, it is in the interest of this international You know, group of, oligarchs. the super capitalists and the, you know, mega, you know, sovereign people of the USA and so on, to use these governments to create a certain kind of confusion in the minds of people, so that the next step actually could be taken, that of complete elimination of these people. And if one may take an example of what happened in 2022, this is Lavrov, the foreign minister of Russia, and a million others have been saying this. That every time, the West actually says that, you know, you come for peace. or create a ceasefire. What they would do during a ceasefire race, you would actually withdraw, and these people come in and strengthen smuggling arms. And make them ready with strategies and designs, and actually ammunition, as well as recruitment into the army, so that the war can actually be continued on a heavier foot, stronger foot than it was actually before. So, what I'm therefore saying, this has been, of course, a 300-400 year old phenomenon, and I've been telling everybody around That there is this idea of the perfidious all-beyond. which in French actually means the traitorous, treacherous white man, the Englishman. which has been the model for America. when they called in the Sea Oaks and the Apaches and the American tribal people for peace talks, the British used to, and the Americans subsequently, called them in, the chiefs used to come in, you kill them, and after that, I mean, there is peace. So that is precisely what is happening with Iran, and that's what shall happen to Philippines, to Palestinians as well. And this is something on a very grand stage which has been waged for the last at least 150 years, more particularly since Second World War. And the West is completely complicit in this whole thing. And therefore, I think it might benefit us to look at this. As small adjustments which are made, because of the temperature rising within America, for example, we haven't touched that. There is a huge opposition to American involvement there,

partly for every person... I mean, you know, what would you say? The self-interest of Americans themselves. They don't want these ghastly wars, which are forever wars, what they call is forever wars, which take out trillions of dollars into this, put you into morass, and be unable to extricate yourself. Until now, they have been clever in not committing any human bodies of Americans to Ukraine or other places, because the moment some people are killed, this opposition will increase. So a lot of this has to do with the manipulation of the thinking of the people, of the MAGA, to say that we think, you know, Ukraine will win, Russia is a paper tiger, and we are bringing, I mean, you know, peace to this. We have beaten up that Netanyahu. And a last thread that needs to be connected is, the MAGA is very unhappy with this man, Trump, and Vance, because of a few reasons, one of which is the kind of slow rise in prices, which has happened in spite of what he said earlier, that we'll get trillions of dollars to actually Reduce the prices from day one. In addition to that, they are also cutting off the medical care and medi aid and so on, which will make, for the very poor people, insurance unaffordable, and those of you who know about medicine in America will know that, you know, most people will be condemned to death with simple diseases and so on. Furthermore, there was a man, a big racist and a white supremacist, called Kirk something or the other. Something Kirk, Togli's Kirk or something, who was murdered some 2-3 weeks ago. And after that, the MAGA machine has been actually trying to say that it is the Israelis who have done that, and the young man who is accused of doing that actually is a false red herring kind of a thing. So there's a lot of, I mean, you know, negative sentiments about Israel, and a lot of that would have contributed to this man. calling Netanyahu in. And while people are very skeptical, they actually think Netanyahu and the Israeli lobby actually runs America. But then he can show, make a show to the MAGA saying, this is what I'm doing, I'm beating this fellow up, we are going to create peace here. So if you discount all this business about Nobel Prize, what Trump is actually doing is to paint himself as a mascot of peace. That is, directed not towards you and I, or towards the Nobel Prize Committee, but towards the MAGA Republicans. So this, I think, must be the right way of actually looking at this whole thing. And, his attempts to actually look at the inner-city America, core out, I mean, democracy, and so on, is also a reason why I think there is an emboldenment of BJP following Trump's, I mean, victory and his actions. In fact, one might say that, you know, there is a serious problem in terms of what Trump has caused to Modi because of, I mean, the rupture of the relationship. But do remember that Trump's attack on the big cities of America by steamrolling the local administrations And being able to say anything and do anything with respect to the people of that place. Masked agents coming and kidnapping people, shooting people, taking over administrations, and sending the National Guard, which is the army, basically, has emboldened most right-wing dictatorships across. You can see a hardening of the tone in that man who, Chancellor of Germany, of Starmer, of people from musical festivals being called as terrorists. 70-year-old people protesting against the genocide of Israel in London being charged under terrorism. And something similar is happening all across the, you know, world, it appears to me, in Hungary, in every place. And in India, therefore. our LARAC and lay and so on must be understood only in terms of the hardening of this resolve. that you can actually get away with anything, because in the so-called largest democracy in this world, that man is able to get away with unbelievable kind of, I mean, you know, atrocities against his own people. And you'll see more and more of that, and the more that happens there in the USA, the more it is likely to happen here in India. And that follows the pattern of Manipur, that follows the pattern of Jammu Kashmir, for example, and as

GSR Krishna never fails to tell me. These people have... we cannot live without internet for 3 days in Bangalore, and you cut it off for 2 years in Kashmir. And you have put in more people than the population of Kashmir as the paramilitary and military forces there. And what are you talking about, freedom in India? So, that's it from my side. I'm sorry I took so much time.

Sunil Sahasrabudhey:

Suresh! Can we... Clinch the argument. that you produced. It is a large and supported argument. But can one say broadly that the... New kind of attention being paid to the war in, Palestine between these two. countries, these two, I mean, war against Palestinians, it's mainly because... the damage that is being done by the Russia-Ukraine war is... has become difficult to handle in the... handle in the international trade. That... it would be somewhat eased out, the international trade, at some abstract level. I'm not saying that it's a direct thing that you've said, but the... the oligarchs all over the world. Who rule the world at present. War contributes to their ruling, but much more than war, maybe the trade contributes to their rule. And if war... Damage trade. Beyond a point, Then... Peace is desired. And trade restored. Are you generally saying this?

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

Not really, because Germany, one of the ways of getting out of a recession and economic trouble is to create a war. That has been the capitalism's most, I mean, central kind of this thing. For example, now, in Germany, the kind of rallying cry for reindustrialization is through the war economy. And for Trump, I think, you know, there is a two-way kind of a slipout that he is trying to actually create. One is to help the MAGA Republicans understand that he's actually working for peace, while simultaneously Making Europe dependent on energy imports from USA, and arms and ammunition being actually sold So that the American military-industrial complex can actually benefit completely from this. So there is a certain kind of pivot away from, let's say, supporting, Ukraine. and trying to wash his hands of Ukraine, because what they're seeing is an imminent defeat. Russia is making so much advance day by day on this, that you get your hands out of this, and say that we are willing to supply you any arms you want. And then it's your war, really. We are not going to put boots on the ground and, you know, involve ourselves in any which way. And that is one way of actually getting out of Ukraine. In this particular thing, in Gaza. The idea is that If it is possible for us to wash our hands of this Israel, which is very difficult, because the people who have paid for the, you know, the senator seats, Senate seats, Congress seats. of both Republicans and Democrats are... is the Jewish lobby, and the oligarchs, who represent also the Jewish lobby. So, that being the case, there is no genuine desire for peace, there is a genuine desire for disentanglement and disengagement from the war, are being seen as sponsoring this particular war. So, what I think Trump is planning... is aiming to do is to, one, disengage, apparently, while the massacre and the genocide continues. As far as I understand, there have been as many as 600,000 people killed in the last two years by the Israelis. And any sudden kind of, I mean, move towards diffusing the situation looks very, very comical and dramatic, and perhaps, I mean, quite unbelievable. Because if you look at Tony Blair, one of the greatest of the vassals of America. And, perhaps, I mean, you know, he used to be called as the pooch, the little Pomeranian dog of, I mean, America, basically. He is... if he's going to actually take the reins of that place, as has been projected, it will be a so-called international, kind of a task force which looks after that, which will ensure that any kind of, I mean, you know, continuing search and destroy kind of missions of Israel

is continued. So, to a large extent, it appears to me that the military-industrial complex of America benefits to a huge extent from this pretense of peace. And there is also trade kind of these things, where trade benefits, where oil can start flowing at a much higher rate. He has already fixed in agreements with the European Union on this, when recently, I mean, that lady went there. to sign the agreement and so on. So they will buy costlier American oil and LNG. They're already fitting many of the ports of America... Europe in order to receive this costlier LNG and so on and so forth. So that energy thing, Europe is going to pay a very heavy price But the rulers of Europe seem to be okay with it, number one, because it's not going to affect them, one. Number two is they are very scared of what will happen if Ukraine loses. So, I would say, just to add to Buday's point, the relative loss or sense of loss which is faced by Europe vis-a-vis America is the arbitrage or the leverage that America has got, in the sense that so long as Europe fears, I mean, the loss to Russia more than actually America fears, then Europe can be made a bigger vassal of USA, and you can declare, I mean, peace by saying we disengage from that. So that appears to be, you know, one of the ways to look at this very complex situation. While not entirely ruling out, what, Buddy said. That's it.

Sunil Sahasrabudhey:

We are waiting for a cartoon to appear somewhere, on the internet. which says... which shows that Trump is threatening the... Nobel Committee in Sweden. that if you don't give me the Peace Prize, I will attack Sweden.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

Oh, there is already a joke there, which says, I will apply, I mean, I will deny the visas to these people, to the committee, and apply 100% the tariffs on Sweden.

Sunil Sahasrabudhey:

freedom, yeah.

Girish Sahasrabudhe:

No, no, but if he stops this war, they will give him the peace prize without any threat. There's no problem.

Sunil Sahasrabudhey:

If he stops the war in Gaza.

Girish Sahasrabudhe:

Yes, yes, obviously. If it stops the war in Gaza.

Sunil Sahasrabudhey:

on. That is what they are betting on, because they are in no position to stop the war in Ukraine.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

No, they don't want to. They do not, they don't.

Girish Sahasrabudhe:

See, that's what I'm saying, that this Russian oil is cheap, because that war is there, and there are these sanctions by everybody on Russia. Isn't it? The relative...

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

Cheap, not only for India, it was cheaper than the alternatives for Europe itself.

Sunil Sahasrabudhey:

Exactly, exactly. Those mod streams with, provided the cheap one.

Sivaramakrishnan G:

Borle, bole.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

No, they destroyed that. The Americans destroyed that. Now they're blaming some Ukrainians or somebody for that.

Sunil Sahasrabudhey:

Okay.

Sivaramakrishnan G:

No, no, while, while all this is true. I'm somewhat puzzled. Why is that the bricks are... brick, you know, that formation bricks is not, doing anything, in the direction of trying to take some initiative now?

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

What are you with...

Sivaramakrishnan G:

I mean, I don't know, I mean, this has been... No, no, no.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

GSR, there is a very great compelling reason for BRICS not to do that. I personally think, you know, the moment we get out of thinking of China as a socialist state, or Russia as a socialist state, but perhaps understand all of the world as capitalism of various forms. I do not think, I mean, the leadership of China is perhaps as opportunistic and as cold-blooded as, I mean, that of the Russian or the American. Perhaps the degree varies, maybe they're not indiscriminate in their attacks on the people. But then, in what way? I mean, they're alarmed with, I mean, you know, Islamic, this thing. Every right-wing man in America, for example, speaks about how this Islam is a great threat to the American way of life. And if you think, I mean, you know, the Europeans don't feel that way, it is wrong. Most Europeans feel that way, I mean, a large number of Europeans are feeling that way. I'm sure the Russians might feel similar. I'm not sure if Chinese don't. I mean, they know they have to be a little more generous, but you have to be very, very, you know, careful about these Muslims. That is the general kind of, this thing. These are people who will come, you know, who could do anything. When pushed. So the idea of Islamic terrorism, I think, has permeated across the bamboo curtain, iron curtain, every which curtain that you can think of. And these are capitalists, I mean, societies, in every which way. China, Russia. In no way must they be mistaken as people with any more honorable, Capacities and, you know, instant, you know, intentions than anybody.

Sivaramakrishnan G:

That is alright.

Sunil Sahasrabudhey:

More, more than half of the... Muslim countries. more than half of the Muslim countries, in fact, a larger number, don't want, Islamic, this thing, militant Islam.

Sivaramakrishnan G:

No, no, that is all right, but then the question is, if BRICS is a kind of a power balance and trying to assert itself, etc, vis-a-vis US and Europe. then they should take some initiative. This is what I am saying. I mean, there is no ideological problem here. It's a question of power. If there is certain amount of shifting of power, why would not the BRICS take initiative and then try to, I mean, make a multipolar kind of... because this is... otherwise, you know, U.S. would dictate. That is one. And secondly, who is really helping Hamas to sustain itself so long? I mean, if it is not the Arab countries, who else? I don't know. I mean, because they are going to be eliminated, or they are going to be disarmed, that is very sure. It seems as though there is a consensus that Hamas should go. But then, that they have sustained this long, It's...

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

But you serious?

Sivaramakrishnan G:

But you see at least.

ಡಾ|| ಜಕ ಸುರೇಶ್ (Suresh) :

Actually, there are two things. One is that, I forgot, I mean, I'll come back to that, you know, in the initial part, you said something. The second part is, Hamas is a creation of Israel. It is, in fact, Israel, which not only gave them arms, but pulled off the border patrols and so on on 22nd October 2023 or something, allowing this to happen so that that, in turn, could actually fuel and justify their mass murder of the Palestinians. That's number one. Number two is, they are absolutely nowhere near as big as any one of us imagined, are the best projects. There are perhaps no more than people, like, you know, there is a passive set of people who sympathize with them. Perhaps several thousand or several hundred thousand, and a few hundred or a few thousand of these people left over with makeshift AK-5047 and, you know, similar stuff like that, grenades and so on. They raid, I mean, sometimes some of these arms stores, and they get lucky and buy things, but they have neither the strength nor the capacity to mount any kind of offensive. It is very wrong to actually think of these people as a party in this. They are a party in a double, you know, negative sense. One is as agents of Israel, and now being hunted by Israel to take it to the logical conclusion that we have eliminated Hamas, which is a blight on humanity. And all of this is managed through the beautiful machine, content creation machine, misinformation, disinformation campaigns of the Western, right from, I mean, the Western newspapers to their, you know, the foolish followers in India and elsewhere, and so on and so forth. And coming to the other question that DSR asked is. Why are these people, including the Muslim ones, these Muslim countries and so on. you look at that entire set of people, this woman, or Qatar, Qatar was attacked. Qatar, by the way, has been financing a huge amount of money in the Sudan, this thing. in, in the Sudan, where millions of people, if not lakhs, are being slaughtered, and all of these are civilians. And none of us really bother so much, because our attention is so taken up by Gaza, that in Sudan, there is that very beautiful tone of possibly 2,000 years. Darfur, if you remember. And, there, they are starving the people in that city of seven and a half lakh people for the last about one month. Most of them will die very soon, basically. And they are also the financiers and bombers of this, Houthi, that Yemen, Yemen and Houthi. So this is actually, basically the Arabs. Arabs are, again, like USA, like India,

like everyone else, ruled by a small percentage of people who use disinformation, who use all kinds of, I mean, you know, force Suppression and so on, against the large majority of the people. And therefore, what appears to us as independent, national kinds of stance on international or national kinds of issues are, in fact, the consequences and these things of the business arrangements of perhaps, I mean, 0.1% of the world's ruling classes, elites, whatever you call them, the oligarchs. Blue Talk rats and so on. So that's... that's my submission.

Krishnarajulu:

I want to say something.

Girish Sahasrabudhe:

Kanish.

Krishnarajulu:

You see, what is the development model? That has been followed by all. Decolonized nations. Post-Second World War.

Girish Sahasrabudhe:

The only model that they have adopted.

Krishnarajulu:

And... They have taken all effort to debunk any other model that has been suggested. I'm not talking about the... legitimacy or the desirability of alternate models as such. I mean. I'm not talking about those. What I'm saying is that the only model that they adopted right from day one including the leadership, of, say, China, then Xiopank. You see, till... these, Mao Jetong and, Chao Winlei and, Chu Tae, they died in 1976. China wasn't adopting a capitalist development model. 1980, Around the time that Nixon starts his ping-pong diplomacy and all that stuff. Then you find that people like Deng Xiaoping come up and suggest a model. which is acceptable to the West. And then the rest is history. See, what strikes you in China? At least it... this is what... struck me the moment I got out of Shanghai Airport. And this is about 10, 12 years ago. And it must have struck people like Sureshara, who have visited China much before that. Is that there? going to outdoor Americans, or outdoor America, in the style of America. the Arab oligarchies, After decolonization, adopted exactly the Western model of development. And I remember we had this, discussion with the Islamic groups, which emerged in the late... just after the, Islamic Republic, Islamist, revolution.

One of the questions... I met one of these groups who were stationed in Bangalore at that time. There were a lot of Islamic students, groups. So, when I went there, I went and met them in their office there. And I asked them, I say, what is this already? We have been following the Islamic Revolution, 79 and all that. But, we'd like to know... I'd like to know what is your concept of what kind of development you should pursue now that you have power in your hands? And Mahmat Mossadegh is dead and gone for 25 years now. So, whatever ideas he had have been effectively buried. What is it that is the thinking among the ayth? You see, the fellow just said something. Which, just seemed to be... he's saying, neither East nor West, Islam is best. Okay, that's fine. I mean, that's okay, you know, it... There's nothing that I had to say in response to that. I said, okay, thank you. And then another fellow said, see, we haven't really thought about all these things. That's okay. But what has happened? You come to the Middle East, And they're replicating everything. that... America did after New Deal. And, post-World War, Europe also did. Post-World

War, Japan has already done. And what? post, independence, India, after the 60s, definitely started doing There is no other development model That is taken seriously at all. The challenge comes... when these... what they call jihadi, Islamists, or whatever you call them. What is their thrust of attack? It's not religion at all. And when the West says they fear the Islamists taking over or doing all that crap. What they're trying to say is they're trying to impose their way of life. That is... Whatever you say, I mean, even the Taliban and Al-Qaeda and all these guys kept saying this, and the people in Iran are also saying it right, openly right now, but ultimately, what do they want to do? You look at their cities. You look at their industry, you look at their development, it's all a copy of what went on in the West. Now, what is going on in the West? There is no alternative. There is no alternative way of life and living. You build the same kind of cities that has been built by the West. You organize life, and your parliaments, and your everything. You see, we're talking about Swaraj Giann Panchayit. Can't you see that we are talking about something entirely different from what is being talked about in the rest of the world? Given this context, All these things... are just manipulations to stick on to power. This is what, for example, Krishna said, and then Suresh has said, and Bude has also said, Innocent. Stick on to power of the groups that can make sure that an alternative model of development does not Capture the minds of the global Bahujan. That's it. China won't allow it. What does Danian mean? What was it? What? They said democracy, but what is this democracy? You ask those guys. Well, they're no longer there to ask those millions who are. Put down under tanks. How you go and ask Navalny, who's no more, what is it that he was protesting about? See, this... They use the word democracy Because it's a term that is nice to handle with the Western press. And the international press. It sounds nice, you know? democracy. Freedom. But... Maybe they had an other idea of this thing. Son numberang jok! Has long been talking about an alternate development paradigm. Nobody likes him. No Congress, no BJP, no nothing. He might find... he might find sympathy in the Ladakhi Muslims, you know, who are there in Kargil, majority. They'll probably support him. I don't know about the Buddhists. But the rest of the world is that. You see, because... is another thing that struck me, and I mentioned this to many people. What struck me is, why is it that China is, you know, so much, sort of pitted against India? What is it? How does India pose a threat to China? In what sense? Why is it that they're always, you know, picking on... siding with these, Lumpin and Pakistan? In any dispute with India. What is it? On what basis? The only basis to me, struck me, is that Buddhism. Has found its protection. Or what if it is based in India? For whatever reasons. It's not a great ideological or any such base, but the ardent Buddhists the people who keep Buddhism, its ideas alive. are there in the northeast, northern part of India, some maybe in Tibet. You know, in, sort of, the singer-on. But that's it. And the largest number of Buddhists in the world are in China. If... the Buddhist way of thinking about life. And about development, and what you should do, and what you should not do. becomes dominant in China. Then... That thinking will influence the thinking of what, let me call it, the Western-oriented Chinese oligarchy. That's bad. If the Taliban, the Al-Qaeda... you see. You see, it's easy to demonize anybody. And what they have done with the Hamas is exactly what they did with Saddam Hussein. We know all that. And this new fellow in Syria, He was an ISIS leader. Who personally beheaded people. Now he's become their leader. Hamas was funded. by Israel, to break... the hold of PLO After Irafat's death, on the Palestinians. And Hamas... Finally, took over. I mean, there's no election or anything, but just by terror. Nobody could oppose Hamas in Palestine. And there are reports that Prior to the October 7... attacked by Hamas. Israel authorities knew it

was going to happen. You allow something to happen. So that, you can say, That this happened, so we are taking revenge. Do you see... Shades of this. I don't know if you see, and I don't have enough evidence, but Behelgam sounds very much like that. See, the Pakistani Authority has no control over those who had a judge, or whoever these guys are. They also want to get rid of those guys. Because those guys... pose a threat to the oligarchy that's ruling Pakistan. You have to get rid of them, so how do you do it? You use the Indian guys, you know, we're ready to do all that. But you have to trigger the event. So, just like the Hamas raid on October 7th. you might organize, if Balakot didn't do it, or whatever does, Batangota, whatever it is before that, you can do it with Pahlgam. See, these are all... manipulations. Of the capitalist roders, to put it in very brief things. militarily, politically eternal. And I'll just say one thing, because we started off In a sense, with this Ukraine war and then the Gaza thing. You see, what is going on in Palestine, actually? European Jews. Or, let me say, Jews of European descent. are slaughtering Asian Arabs. whose ancestors lived in Palestine for thousands of years. The European Jews, the descendants of the European Jews were massacred in... Europe. For thousands of years. Ever since Christ and his Jewel followers migrated or fled to Europe, During the time of... Who was that? Augustus 3rd, who was the... the Roman Emperor, then. Ever since then, they've been persecuted. They formed a Roman Catholic church. And that slightly diverted that persecution. But subsequently, it caught up with them.

With the advent of... the Nazis. And they were produced or persecuted in Russia also. The white people of Europe have been persecuting the Jews throughout history. And now those white descendants of those Jews are now slaughtering Asian Arabs. the same Arabs, The same Asian people. who were enslaved by the Egyptian, king... empires... kingdoms. So... And the great sympathy is for the Israelis. The white man killing the brown men. Whereas in Ukraine, it's white people killing white Christians. So, that's terrible. You see, you can't allow that kind of happen. It's a racist war. White supremacy. MAGA, as I said sometimes, is make the Anglo-Saxon great again. It is racism. Combined with, well, capitalist racism, put it in a very short way. And the Islamic thing is an Arab opinion. an Asian opinion. You can't tolerate that. And the Indian thing, well, the Chinese see it as the Buddhist opinion, trying to assert itself as a way of life. And ultimately, the Arab oligarchies have all adopted an American way of life. And thinking. Development paradigm. All the reforms are in line with what the Westerns consider to be a liberal, democratic model. That's it. So... There is nothing in isolation, per se. There is a... there is a worldview, there is a... there's a thinking that dominates Peoples of the world. The oligarchs... To my mind, they seem to think very similarly all over the world. Respective... irrespective of race. Color. The Chinese are basically a white race, remember that, in terms of color, at least. Iterations. The Japanese are also Asians. There are white peoples. They're not like Southeast Asia and Africa and Latin America. We'll collude. But that apart, we have our own... Philosophies of ways of looking at life. And that is something. the... The capitalist oligarchy Racism is something that they used also, right through history, of course. Colonization is all about racism. And they don't want to tolerate that. If Sonam One Chuk, he's a Buddhist. You can't allow him to... Again, ascendancy of... and influence people's thought. That is very dangerous. That was the problem with Jammu and Kashmir. And that is why they've... try to... I mean, whatever... I mean, the only alternative that those guys could offer local resistance to, say, Indian rule, or whatever you want to call it, is whatever Islamic thing that was being exported from Pakistan, etc. And that itself is tottering. Because the oligarchy of Pakistan is all a Western-oriented oligarchy. They have nothing to do with all this so-called Islamic thought. So... So, no, Mangchuk is part... and it'll happen everywhere. It has happened everywhere. It has happened... I mean, Indian thing, it... Tell me, in Assam, there was this Nelly massacre. In 80, 83, 84, when was it? Indra Gandhi. Presided over that. A kind of genocide. What they said was people

don't... are being prevented from voting. They're happy. Northeast. They don't... Subscribe to the mainstream thinking, you know. In terms of the way of life, development, etc, etc. She gave it to the Midraganda, they did that. Modi has learned All the lessons from her. And it'll happen everywhere. It's happening with the Indian middle class in a very big way. You say anything against... What is considered to be the dominant Hindu Tua, whatever we... whatever they call it. Then you're finished. In whatever way they can finish. Sideline you, sidelined. Okay, having said all this... I think Bahujan Gyan Panchay, or Suraj Panchayit, Is a very important deliberation. Only because... We seem to be the only people who are actually openly Advocating and deliberating on something like this. An alternate view of... way of looking at life. And so it's like... That is our strength. That is also the point at which We will be attacked. Okay, that's all I was saying.

Girish Sahasrabudhe:

Okay. Naresh? Notable language, none of that shit.

Naresh Kumar Sharma:

Then I joined, I could join very late. Most of it, I'm not able to understand, actually. Either conspiracy theories I'm able to understand. Nor what Chris just now said about Inverghadi society, or nearly massage. I'm sorry to say what? It was the only thing that any ruler... So they can side with this or that. Any rural, we want that to happen, it goes beyond me. So, where it is going is, beyond. Let me say what I have heard so far. I'll just give you one listing, but... Since last, 15-20 minutes, water, or... After Suresh started talking. Most of it, I'm not able to understand. Why will, hamas collaborated with Israel to be killed. Also goes beyond me. If you say 10 years ago they had set it up, I understand. But, 2023, they will be collaborating with them to be killed. Either they must be complete, The first in their heads. Or it makes no sense to me. I'm sorry to say that. What? na. Independent of all this, it has its own importance. But, that is how I felt when I just moved to this part. That's our item.

Girish Sahasrabudhe:

Okay. No, no, that part is just like Indra Gandhi had set up Dendra Valley, you know? And then finished him off.

Naresh Kumar Sharma:

That is okay. It became a problem for Inside. She did not set up Binta Wadi to finish her. See, she did not set up Bhindra Wadi to finish it. She set up for some other purpose, that one can understand. But if one is saying, how much in 2023, get this? That goes totally beyond. That's what I'm saying. So, I don't know, how does it make sense to somebody else? It doesn't make to me. That's why I said 10 years ago, they are set up to... finish off PLO or something, or 15 years ago, that I can understand. Well, the story is better known. But when he is finished, he'll become a nuisance to Indraghan youth. It was not a... this was not a good thing for her, either. So, I think we... I, I don't know, this is... it goes beyond any perspective for me.